Name of the college – A.P.S.M College, Barauni, Begusarai
Name – Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt – A.I.H & C
Lession/Plan for Class – B.A. A.I.H & C(H) paper II I part
Date – 17-04-2021
Name of the topic —— Upanayan Sanskar

उपनयन संस्कार —

हिन्दू परम्परा के अनुसार मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने के लिए 16 संस्कारों को अपने जीवन में अपनाना जरूरी है, इन्हीं संस्कारों में दसवां संस्कार है उपनयन – संस्कार, जिसे जनेऊ संस्कार और यज्ञोपवीत के नाम से भी जाना जाता है, श्रुती मान्यता है कि इस संस्कार को करने से बच्चे की न केवल भौतिक, बल्कि आध्यात्मिक प्रगति भी अच्छी तरह से होती है। इस संस्कार में शिष्य को 'गायत्री मंत्र' की दीक्षा मिलती है, इसके बाद उसे यज्ञोपवीत धारण करना होता है। अपनी – अपनी शाखा के मुताबिक वह वेदों का अध्ययन भी करता है।

(1) इसलिए जरूरी है उपनयन संस्कार —

P.T.O.

उपनयन संस्कार का महत्व —

बच्चे की शिक्षा-दीक्षा आरंभ करवाने के लिए जो संस्कार किया जाता है उसे उपनयन संस्कार कहा जाता है। चूंकि शिक्षा मनुष्य के जीवन में निरंतर चलने वाली एक प्रक्रिया है, जिससे शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास होता है। आरंभ में बच्चे को जब इस लायक समझा जाता है कि अब वह गुरुओं से ज्ञान अर्जित करने में सक्षम है, तो उस अवस्था में बच्चे का उपनयन संस्कार किया जाता है। प्राचीन समय में गुरु-शिष्य परम्परा के तहत गुरुओं के पास बालक को लाया जाता था। उपनयन का शाब्दिक अर्थ है सामिप्य यानि निकटता व उन्नति भी लिया जाता है। शास्त्रों के अनुसार जन्म से सभी शूद्र पैदा होते हैं लेकिन संस्कारों से बालक द्विज होते हैं। उपनयन संस्कार के बिना बच्चे को द्विज नहीं माना जाता। हालांकि वर्ण व्यवस्था के तहत शूद्र वर्ण व कन्याओं के लिए उपनयन संस्कार वर्जित था। इसलिए उनके लिए विवाह संस्कार ही द्विजत्व प्रदान करने वाला संस्कार होता था।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

कब होता है उपनयन संस्कार —

उपनयन संस्कार को नवम संस्कार कर्णभेदि यानि कि कर्णभेद, कर्णछेदन संस्कार के पश्चात् किया जाता है। प्राचीन समय में वर्णाश्रम व्यवस्था के तहत भिन्न वर्णों के लिए भिन्न समयानुसार उपनयन संस्कार करने का विधान रहा है। शास्त्रानुसार यह ब्राह्मण वर्ण के बालको का आठवे वर्ष में, क्षत्रिय बालको का ग्यारहवे वर्ष में एवं वैश्य बालकों का 12 वे वर्ष में किया जाता था। शूद्र वर्ण की कन्याएँ उपनयन संस्कार की अधिकारी नहीं मानी जाती थी। जिन ब्राह्मण बालकों की बुद्धि तीव्र हो उनके लिए उपनयन संस्कार वर्णानुसार पाँचवे, जो क्षात्रिय बालक शक्तिशाली हो वे छठे व जो वैश्य बालक कृषि करने की इच्छा रखते हो उनका उपनयन संस्कार आठवे वर्ष में किया जाता था। उपनयन संस्कार के लिए अधिकतम निर्धारित आयु तक उन बालको का उपनयन संस्कार नहीं होता था, उन्हे व्रात्य कहा जाता था समाज में। इसे निंदनीय भी माना जाता था समाज में। वर्तमान में उपनयन ही नहीं बल्कि सभी P.T.O.

लेकिन उपनयन संस्कार में बहुत बदलाव आया है। इसका कारण यह है कि अब विद्या ग्रहण करना सबका अधिकार है, और जैसे ही बच्चा सोचने-समझने चलने फिरने बोलने के लायक होता है माता-पिता उसे शिक्षा ग्रहण करने के लिए आंगनवाड़ी केन्द्र, प्ले स्कूल आदि में दाखिला कर लिया जाता था, तो राजकीय विद्यालयों में भी 6 वर्ष की आयु से बच्चों की शिक्षा आरंभ हो जाती है। फिर भी हिन्दू धर्म को मानने वाले कुछ समुदायों में इस संस्कार को विधि-विधान से किया जाता है।

उपनयन संस्कार विधि :— इस संस्कार के दौरान बालक को गुरु के सानिध्य में भेजा जाता है ताकि वह गुरु से ज्ञान प्राप्त कर देश व समाज की उन्नति सहित अपने जीवन को सही ढंग से जी सके। इस संस्कार के द्वारा आरम्भ में वेदों की शिक्षा भी आरंभ की जाती थी, जिसकी शुरुआत गुरु द्वारा बालक बालक को गायत्री मंत्र में दीक्षित कर दी जाती थी। इसके लिए पहले बालक को यज्ञोपवीत भी धारण करवाया जाता था क्योंकि पहले बालक को यज्ञोपवीत धारण करने के

P.T.O.

पश्चात ही वेद - शिक्षा आरम्भ करने का अधिकारी हो पाता था। वेदाध्ययन अपनी - अपनी शाखाओं के अनुसार किया जाता था। अपने शिक्षा के दौरान बालक ब्रह्मचर्य का पालन करने का संकल्प भी लिया जाता था। इस संकल्प के पश्चात ही गुरु उसे अपने पास रहने की आज्ञा देते थे। ततपश्चात बालक को गुरु के द्वारा ज्ञान प्राप्त करने के साथ - साथ - स्वयं व गुरु के भरण - पोषण के लिए भिक्षा मांग कर लानी पड़ती थी। मान्यता है कि इससे बालक के अंदर से अहंकार की भावना नष्ट हो जाती है। जो कि ब्राह्मण बालक के लिए ऊन के धागे की कौपिनी धारण करते थे। मेखला के साथ ही ब्राह्मण ढाक या बेल का डंडा रखते थे, तो क्षत्रिय बरगद वृक्ष का वही वैश्य लिए उदुंबर का डंड धारण करने का विधान था।

वस्तुतः कह सकते है कि बच्चा जब अपने गुरु के पास पहुँचता है और उनसे शिक्षा प्राप्त करना शुरु करता है, तो उसी दौरान उनका उपनयन संस्कार शुरु हो जाता है। इसी

P.T.O.

क्रम में बच्चे वेद - पढ़ने का अधिकारी होने से पहले उसे यज्ञोपवीत धारण करवाया जाता है। 'गृहसूत्र' एवं 'स्मृति' ग्रंथों में उपनयन संस्कार की विधि - के बारे में विस्तार से बताया गया है। गुरुकुल के शिष्य भिक्षा मांगकर लाते थे। फिर बच्चा गुरु को प्रणाम करके उनसे शिक्षा देने की विनती करता था। फिर गुरु वैदिक मंत्रों का जाप कर शिष्य को नये कपड़े पहनने के लिए देते थे। गुरु बच्चे से उसका नाम पूछते हैं, और वह अपना नाम बताता है। वह उससे पूछते हैं कि वह किसका शिष्य है। इसके बाद गुरु उसका उपनयन संस्कार पूरा करते हैं। जनेऊ धारण करने के मंत्र - यज्ञोपवीतं परमं पवित्रमं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्, आयुष्यमग्र्यं प्रतिमु - ञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

जनेऊ की लम्बाई - यज्ञोपवीत की लंबाई 96 अंगुल होती है इसका अभिप्राय यह है कि जनेऊ धारण करने वाले को 64 कलाओं और 32 विद्याओं को सीखने का प्रयास करना चाहिए। चार वेद, चार उपवेद, छह अंग, छह दर्शन, तीन सूत्र ग्रंथ, नौ आरण्यक मिलाकर कुल 32 विद्याएँ होती हैं। 64 कलाओं में जैसे - वास्तु निर्माण, व्यंजन कला, चित्रकला, साहित्य कला, दस्तकारी, भाषा यंत्र निर्माण, सिलाई कढ़ाई, बुनाई, आभूषण निर्माण कृषि ज्ञान आदि। भारतीकुमारी

इति सिद्धम् 17-04-2021